

**भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों के सम्भावित खतरों का वर्णन करें।**

Ans. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों की स्थापना एवं कार्यों से उत्पन्न होने वाले सम्भावित खतरों का अध्ययन अग्र प्रकार किया जा सकता है

1. विदेशों को बड़ी मात्रा में धन का प्रेषण: बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगम विदेशी निजी क्षेत्र विनियोजक अपने द्वारा विनियोजित पूँजी की तुलना में कहीं अधिक धन अधिकार शुल्क भुगतान, अपने द्वारा प्रदान की गयी तकीनकी सहायता का पारिश्रमिक और व्यवसाय एवं उद्योगों से कमाया गया लाभ अपने प्रधान कार्यालय वाले राष्ट्रों को भेज देते हैं, जिसके फलस्वरूप धन का स्थानान्तरण देश से दूसरे देशों को होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका की एसो (ASSO) तेल कम्पनी जिसकी भारत में 30 करोड़ रुपये की पूँजी लगी हुई थी, इसने 1968-70 की अवधि में 83 करोड़ रुपये के लाभ अमेरिका को भेजे थे। ऐसे ही अमेरिकन तेल कम्पनी कालटेक्स (Caltex) ने भी इसी अवधि में भारत से 43 करोड़ रुपये के लाभ अमेरिका को भेजे थे। इसी तरह अन्य बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों के द्वारा भारत में कमाये गये बड़े-बड़े लाभ अपने देशों में भेजकर बड़ी मात्रा में भारत से विदेशों को कोषों का बहिर्वाह किया है।

2. अधिक लाभार्जन और उपभोक्ताओं का शोषण : बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ तथा निगम और विदेशी निजी कम्पनियाँ विदेशी ब्रान्डो तथा ट्रेडमार्कों के उपयोग द्वारा ऊँची कीमतों पर अपने उत्पाद बेचकर भारतीय

उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं तथा बहुत बड़ी मात्रा में लाभ कमाते हैं।

3. भुगतान संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव जब भारत से बड़ी मात्रा में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों के द्वारा विदेशी को लाभ, फीस तथा अधिकार शुल्क के रूप में रकम भेजी जाती है और बड़ी मात्रा में निर्मित अथवा कच्चा माल विदेशों से आयात किया जाता है तो विदेशी मुद्रा हमारे देश से दूसरे देशों को जाती है और हमारे देश के भुगतान संतुलन पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में न केवल भारत में बल्कि समस्त विकासशील राष्ट्रों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों के द्वारा बड़ी मात्रा में विदेशों को धन भेजे जाने के कारण विदेशी विनिमय संकट व्यापक रूप लेता जा रहा है।

4. स्वदेशी हितों की उपेक्षा साधारणतया समस्त बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगम अपने कार्य संचालन में अपने लाभों को अधिकतम करने का प्रयास करती हैं जिससे स्वदेशी हितों की अपने आप अवहेलना हो जाती है और देश के भावी विकास में बाधा पड़ती है। इसी वजह से कोका कोला जैसी अमेरिकन कम्पनी को भारत में अपना व्यवसाय बन्द करना पड़ा।

5. क्षेत्रीय असंतुलन को बढ़ावा : निजी क्षेत्र की विदेशी कम्पनियाँ या बहुराष्ट्रीय निगम सदैव अधिकतम लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से किन्हीं विशेष क्षेत्रों में ही अपनी औद्योगिक इकाई स्थापित करते हैं, जिसके कारण पिछड़े हुए क्षेत्रों में औद्योगिक विकास सम्भव नहीं हो पाता है और क्षेत्रीय असमानता को प्रोत्साहन मिलता है जो किसी भी राष्ट्र के हित में नहीं समझा जाता है।

6. दीर्घकालीन औद्योगिक विकास के विरुद्ध : किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में यदि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगम तथा निजी क्षेत्र को विदेशी कम्पनियाँ अधिक स्थापित हो जाती हैं तो वह उस राष्ट्र के औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल नहीं होता है, क्योंकि ये कम्पनियाँ अपने विशाल आर्थिक संसाधनों तथा महँगे अमात्मक विज्ञापनों के माध्यम से देश के उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगती हैं। इतना ही नहीं, ये कम्पनियाँ अपने उत्पादों को घाटे पर बेचकर अपनी प्रतिस्पर्द्धा फर्मों को बाजार में टिकने भी नहीं देती हैं या उन्हें अपने में मिलने के लिए बाध्य कर देती हैं जिससे वे एकाधिकारी की स्थिति का लाभ उठा सके जिसके कारण स्वदेशी उद्योगपति औद्योगिक क्षेत्र में आगे नहीं आ पाते हैं तथा देश भी अपने औद्योगिक विकास के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों अथवा निगमों पर निर्भर हो जाता है जो दीर्घकाल में घातक भी सिद्ध हो सकता है।

7. पुरानी तकनीक का आयात : यद्यपि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों तथा निजी क्षेत्र की कम्पनियों के द्वारा अपने और सहभागी उद्योगों में उन्नत प्रौद्योगिकी और उच्च तकनीक का प्रयोग किया जाता है, लेकिन ये कम्पनियाँ विकसित राष्ट्रों के द्वारा छोड़ी गयी तकनीक को विकासशील राष्ट्रों को हस्तान्तरित कर देती हैं और उसकी ऊँची कीमते वसूल करती हैं। इन कम्पनियों के द्वारा ऐसा करने से भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों को भारी हानि उठानी पड़ती है, क्योंकि ये तकनीक देश के अनुकूल नहीं होती हैं तथा उसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ती है।

8. अन्तरण कीमत से भारी लाभार्जन तथा कर अपवंचन बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ तथा निजी क्षेत्र की कम्पनियाँ अन्तरण कीमत से भारी मात्रा में लाभ अर्जित करती एवं हैं। वे ऊँची कीमतों पर अपनी विदेशी सहायक कम्पनियों से कच्चा माल क्रय करती हैं और दूसरी ओर वे ही विदेशी सहायक कम्पनियों को निर्मित माल बहुत कम कीमत पर विक्रय करती हैं जिसके फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लाभ कम हो जाते हैं तथा विदेशी में बढ़ जाते हैं। इसके द्वारा करो की चोरी भी की जाती है जिससे देश की सरकार को हानि उठानी पड़ती है।

9. कट्टर प्रतिस्पर्धा तथा देश को दूसरे राष्ट्रों पर निर्भरता ये कम्पनियाँ अपने विशाल संसाधनों तथा उन्नत तकनीक के प्रयोग से उत्पादन लागत में कमी लाती हैं वहीं दूसरी ओर ये स्वदेशी उद्योगों के साथ कट्टर प्रतिस्पर्धा करके उनके भविष्य को भी खतरे में डाल देती हैं। विदेशी ब्राण्डों, ट्रेडमाकों और भ्रमात्मक प्रचार के माध्यम से ये कम्पनियाँ बाजार में अपनी प्रभुसत्ता जमाने में सफल हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप स्वदेशी उद्योगों का पतन होने लगता है और राष्ट्र आखिर में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों पर आश्रित हो जाता है। ऐसा होने से देश की आत्मनिर्भरता तथा सुरक्षा दोनों को खतरा उत्पन्न हो जाता है।

10. राजनैतिक भ्रष्टाचार और राजनैतिक हस्तक्षेप का डर : ये कम्पनियाँ एवं निगम अपने विशाल संसाधनों तथा उन्नत तकनीक के आधार पर अपने व्यावसायिक हितों की अभिवृद्धि एवं रक्षा के लिए अनेक बार राजनैतिक भ्रष्टाचार का सहारा लेती हैं। राजनेताओं को ये कम्पनियाँ मोटी-मोटी रकम देकर अपने हित में काम करवा लेती हैं और ये

राजनैतिक हस्तक्षेप में भी भाग लेने लग जाती हैं जिसका देश की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

11. घरेलू बाजार में अधिक रुचि : ये निगम निर्यात की अपेक्षा घरेलू बाजार में ज्यादा रुचि दर्शाते हैं। उनकी अधिक रुचि भारत के विस्तृत घरेलू बाजार की माँग का उपयोग करने की पायी गयी है। इस संबंध में भारत को चाहिए कि वह बहुराष्ट्रीय निगमों से समझौता करते समय चीन की तरह निर्यात की शर्त पर अधिक जोर दे।